श्री सत्संग सुधा

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

हे प्रिय आत्मन् ! मनुष्य देह धारी समस्त प्रतिमाओं में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी स्वयं विराजमान है। और दर्शन-श्रवण मात्र समस्त-पदार्थ उनकी सम्पत्ति है अत: ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की आज्ञानुसार उनकी सम्पत्ति का सदुपयोग करते रहना मानव कर्त्तव्य है और उनकी आज्ञा के बिना किसी मानव का स्वतंत्रता पूर्वक अपने आज्ञाकारी बनाने की इच्छा करना, कामना करना वर्जित है। अन्यथा क्रमश: दिमागी शक्ति का और दिमागी सम्पत्ति का ह्रास-विनाश करते-करवाते रहेंगे।

स्मृति रहे! अपने आज्ञाकारी बनाने की इच्छा, द्वेष की माता है और द्वेष केवल बैरी दुश्मनों का निर्माता है, तथा वैरी-दुश्मन प्रतिकूलताओं के दाता हैं। कठिन दण्डधारा **श्री गीता अ० ७/२७, अ० १६/२१, अ० ३/४१ आदि में प्रकाशित है।**

इच्छा द्वेष समुत्थेन, द्वन्दमोहेन भारत।
''काम: आत्मानम् नाशनम्''
''काम: क्रोध: ज्ञान-विज्ञान नाशनम्''

भगवन! हम क्या इच्छा करें ?

समाधान– हे प्रिय आत्मन् ! सच्ची-प्रेम भक्ति में प्रकाशित विधि-विधान युक्त ॐ आनन्दमय प्रभु पिता को अपना मालिक बनाने की इच्छा करें। और तद्नुसार उनके आज्ञाकारी बनने की इच्छा से उस विधान के अनुसार सब प्रकार के कर्म-धर्म करें, यही इच्छा, यही कामना मानव के महा-मानव बनाने वाली है। यही निरंहकारी भक्ति, प्रेम-भक्ति दिमागी रोग नाशक है अन्यथा परिणाम हानिकारक कर्मो द्वारा मनोमय दिमागी कोष में विष, अग्नि और मानसिक वायु-बवण्डर की वृद्धि करते रहेंगे। तथा १२५ से अधिक रोगों द्वारा दिमाग को उबालते रहेंगे। इस महाघोर दण्ड का नाम है परेशानी। अनेक चित्त विभ्रान्ता मोह जाल समावृता: । हे प्यारे प्रेमियों मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम-रूप को मत भूलो। मुझे सर्वत्र, सब रूपों में और अपने हृदय दिमाग में मानों।

ॐ शान्तिमय

मनुष्य ज्यों ही यह मानने लगता है, मैं तो कुछ जानने लगा, तभी उसके ज्ञान के द्वार बन्द हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner